



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 08 (अगस्त, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

वर्षा ऋतु में मुर्गीपालन प्रबंधन

*श्रीमती कैलाश

सहा. आचार्य (अतिथि संकाय), पशुपालन उत्पादन प्रबंधन, कृषि महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: solankikishu22@gmail.com

वर्षा ऋतु में अधिक आर्द्रता, तापमान में उतार-चढ़ाव, गीले बिछावन और रोगों की संभावना बढ़ जाती है। उचित प्रबंधन द्वारा हम इन समस्याओं को कम करके झुंड के स्वास्थ्य, वृद्धि, उत्पादन और लाभ को बनाए रख सकते हैं। वर्षा ऋतु पोल्ट्री उद्योग के लिए चुनौतीपूर्ण होती है क्योंकि इस मौसम में आर्द्रता अधिक होती है, बिछावन गीला हो जाता है और रोगों का खतरा बढ़ जाता है। उचित प्रबंधन द्वारा इन समस्याओं को नियंत्रित करना आवश्यक है ताकि उत्पादन में हानि न हो।

वर्षा ऋतु में प्रमुख समस्याएँ

- अधिक आर्द्रता और कम तापमान
- गीला बिछावन और अमोनिया गैस का निर्माण
- रोगों की अधिकता — कॉक्सीडियोसिस, फाउल पॉक्स, रानीखेत, एस्प्रेगिलोसिस आदि
- खराब वेंटिलेशन और वायु गुणवत्ता
- खराब फीड सेवन और फीड कन्वर्जन
- विकास में कमी, तनाव और मृत्यु दर में वृद्धि
- मक्खी, मच्छर और अन्य कीटों की वृद्धि

पोल्ट्री हाउस एवं बिछावन प्रबंधन

पोल्ट्री हाउस प्रबंधन

- पोल्ट्री हाउस मजबूत, लीक-प्रूफ और जलरोधी होना चाहिए।
- छत, दीवार और पर्दों की नियमित जाँच करें।
- कहीं से पानी का रिसाव न हो इसका ध्यान रखें।
- बिछावन को सूखा रखने के लिए उचित वेंटिलेशन करें।
- भीड़भाड़ से बचें, अनुशंसित संख्या में ही पक्षी रखें।
- हाउस की दिशा पूर्व-पश्चिम रखें ताकि बारिश और हवा का प्रभाव कम हो।

वेंटिलेशन और तापमान नियंत्रण

- दिन में यदि बारिश न हो तो पर्दे खोलें और हवा के आवागमन की व्यवस्था करें।
- नमी और हानिकारक गैसों (अमोनिया) को बाहर निकालें।
- एजॉस्ट फैन का उपयोग करें यदि मौसम आर्द्र हो।
- वायु का उचित प्रवाह बनाए रखें।
- पक्षियों की आयु के अनुसार उपयुक्त तापमान बनाए रखें।

बिछावन प्रबंधन

- सूखा, अच्छी गुणवत्ता वाला बिछावन सामग्री (चावल की भूसी, लकड़ी के बुरादे, मूंगफली की भूसी आदि) का उपयोग करें।
- बिछावन की मोटाई 2-4 इंच रखें।
- बिछावन को नियमित रूप से उलट-पलट करें।
- गीला बिछावन तुरंत हटाकर नया सूखा बिछावन डालें।
- पीने के पानी का रिसाव रोकें।

जल निकासी प्रबंधन

- हाउस के आसपास उचित जल निकासी की व्यवस्था करें।
- बारिश का पानी हाउस के अंदर न आने दें।
- चारों ओर की नालियाँ साफ रखें ताकि पानी जमा न हो।
- फर्श को ऊँचा बनाएँ।

आहार प्रबंधन**-अंडा उत्पादन करने वाली मुर्गियों में**

- कैल्शियम, फॉस्फोरस, प्रोटीन और विटामिन से संतुलित आहार दें।
- टूटे या गंदे अंडों को नियमित रूप से हटाएँ।
- अंडे देने वाले स्थान और nesting boxes को साफ एवं सूखा रखें।
- संतुलित और पौष्टिक आहार दें ताकि प्रतिरक्षा शक्ति बढ़े।
- आहार में विटामिन C, विटामिन E, B-कॉम्प्लेक्स, जिंक और इलेक्ट्रोलाइट मिलाएँ।
- फीड को सूखा और फफूंदी से बचाकर रखें।
- फीड को ढककर रखें, गीला न होने दें।
- आहार में अचानक परिवर्तन न करें, नियमित अंतराल पर आहार दें।

पानी प्रबंधन

- हमेशा स्वच्छ, ठंडा और साफ पानी उपलब्ध कराएँ।
- पानी की लाइनों और ड्रिंकर को रोजाना साफ करें।
- पानी में नियमित रूप से पोटेशियम परमैंगनेट (1:4000) या ऑर्गेनिक एसिड मिलाएँ ताकि संक्रमण न हो।
- पानी के स्रोत को प्रदूषण से बचाएँ।

जैव-सुरक्षा उपाय

- बाहरी लोगों, वाहनों और आगंतुकों का प्रवेश सीमित करें।
- प्रवेश द्वार पर कीटाणुनाशक का फुट बाथ रखें।
- हाउस, उपकरण और परिसर की नियमित सफाई एवं कीटाणुशोधन करें।
- चूहे, कीड़े, मक्खी और जंगली पक्षियों को नियंत्रित करें।
- “All in – All out” प्रणाली का पालन करें।

कीट एवं वाहक नियंत्रण

- मक्खी और मच्छरों को नियंत्रित करने के लिए उपयुक्त कीटनाशकों का छिड़काव करें।
- मच्छरजाल और रिपेलेट का उपयोग करें।
- परिसर को साफ और सूखा रखें।
- नालियों में पानी जमा न होने दें।

रोग नियंत्रण एवं स्वास्थ्य प्रबंधन**वर्षा ऋतु में होने वाले प्रमुख रोग**

- कॉक्सीडियोसिस — रक्तयुक्त दस्त, निर्जलीकरण।
- IB/श्वसन संबंधी रोग — छींक, खाँसी, नाक से स्राव।
- फाउल पॉक्स — चोंच, पंख रहित भाग और त्वचा पर घाव/धब्बे।
- रानीखेत — श्वसन कष्ट, तंत्रिका लक्षण।
- एस्प्रेगिलोसिस — श्वसन कठिनाई, नाक से स्राव।

टीकाकरण कार्यक्रम (उदाहरण)

आयु (दिन)	टीका	रोग
5-7	लासोता / रानीखेत (ND)	रानीखेत
14	IBD	संक्रामक बर्सेल रोग (IBD)
21	लासोता / रानीखेत (Booster)	रानीखेत
28	फाउल पॉक्स	फाउल पॉक्स
35	IBD (Booster)	IBD

रोजाना निरीक्षण

हर दिन निम्न बातों की जांच करनी चाहिए:

- मुर्गियों का व्यवहार
- दाना और पानी का सेवन
- मल की स्थिति
- खांसी/छींक या सांस लेने में परेशानी
- आंख और नाक से स्राव
- litter की नमी
- मुर्गीघर का तापमान और वेंटिलेशन
- मृत या कमजोर पक्षियों की संख्या
- अंडा उत्पादन और अंडों की गुणवत्ता

सबसे महत्वपूर्ण : वर्षा ऋतु में सफल मुर्गीपालन के लिए मुख्य 5 मंत्र है—

सूखा मुर्गीघर + सूखी बिछावन + साफ पानी + सुरक्षित दाना + मजबूत biosecurity = वर्षा ऋतु में स्वस्थ मुर्गियां और बेहतर उत्पादन।

निष्कर्ष

वर्षा ऋतु में मुर्गीपालन की सबसे बड़ी चुनौती अधिक नमी और उससे जुड़े रोग हैं। इसलिए केवल बीमारी होने के बाद उपचार करने के बजाय रोकथाम आधारित प्रबंधन अपनाना अधिक प्रभावी है। मुर्गीघर को सूखा रखना, उचित ventilation, स्वच्छ पानी, फूंद रहित दाना, नियमित disinfection, उचित vaccination और दैनिक स्वास्थ्य निरीक्षण से पक्षियों की मृत्यु दर कम की जा सकती है तथा अंडा और मांस उत्पादन को बेहतर बनाए रखा जा सकता है।